बाल्यावस्था

बालविकास की अवस्थाओं में शैशवावस्था के बाद बाल्यावस्था का आरम्भ होता है। इसे जीवन का अनोखा काल भी कहा जाता है। यह बालविकास की दूसरी अवस्था है। यह अवस्था छः वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक होती है। मनोवैज्ञानिकों ने इस अवस्था को निम्नलिखित नाम दिया है-

प्राथमिक विद्यालय की आयु (क्योंकि बालक इसी अवस्था में ही अपनी प्रारम्भिक विद्यालय की शिक्षा शुरू करता है।)

स्फूर्ति आयु (क्योंकि इस समय में बालक के अंदर स्फूर्ति अधिक होर्त है।)

गन्दी आयु (क्योकि इस अवस्था में बालक खेलकूद,भागदौड़,उछल-कूद में अधिक लगे होने के कारण यह प्रायः गन्दा और लापरवाह रहता है।)

समूह आयु (क्योंकि इस काल में बालक-बालिकाओं में सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने की क्षमता अधिक होती है। और वे अपना-अपना समूह बनाते है।)

जीवन में बाल्यावस्था के महत्व पर प्रकाश डालते हुए ब्लेयर जोन्स सिम्पसन ने कहा है कि “शैक्षिक दृष्टिकोण से जीवन चक्र में बाल्यावस्था से अधिक महत्वपूर्ण और कोई अवस्था नहीं है।” जो

अध्यापक इस अवस्था में बालकों को शिक्षा देता है, उन्हें बालक के आधारभूत आवश्यकताएँ एवं उनकी समस्याओं का और उन परिस्थितियों का पूर्व जानकारी होना चाहिए जो उनके व्यवहार को रूपान्तरित और परिवर्तित करती है। इस अवस्था में बालक के जीवन में स्थायित्व आने लगता है और वे आगे आने वाले जीवन की तैयारी करने लगते है।

कुछ महत्वपूर्ण कथन(परिभाषाएँ)

कोल व ब्रूस – "बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है।"

किलपैट्रिक – "बाल्यावस्था को प्रतिद्वन्दता की अवस्था कहा है।"

जे0 एस0 रॉस – "बाल्यावस्था को मिथ्या परिपक्वता का काल कहा है।"

बाल्यावस्था की विकासात्मक विशेषताएँ

बाल्यावस्था की कुछ महत्वपूर्ण विकासात्मक विशेषताएँ निम्नलिखित है –

शारीरिक तथा मानसिक विकास में स्थिरता

बाल्यावस्था में विकास की गति में कुछ धीमापन आ जाता है और शारीरिक तथा मानसिक में विकास में स्थिरता आ जाती है। बालकों की चंचलता भी काम होने लगती है। इस काल मे शारीरिक व मानसिक स्थिरता बाल्यावस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है ।

इस अवस्था को दो भागो में बाँटा गया है –

1. संचय काल (6 से 9 वर्ष तक)
2. परिपाक काल (9 से 12 वर्ष तक)

आत्मनिर्भरता की भावना

शैशवावस्था की तरह इस अवस्था में बालक अपने शारीरिक एवं मानसिक कार्यों के लिए किसी दूसरे पर आश्रित नहीं रहता है। बाल्यावस्था में वह अपना व्यक्तिगत कार्य जैसे- नहाना,कपड़ा धोना,स्कूल जाने की तैयारी आदि स्वयं कर लेता है।

प्रतिस्पर्धा की भावना

बाल्यावस्था में बालकों में प्रतिस्पर्धा की भावना आ जाती है। बालक अपने भाई-बहन से झगड़ा करने लगता है।

सामूहिक प्रवृत्तियों की भावना :- बाल्यावस्था में बालक अपना अधिक से अधिक समय दूसरे बालकों के साथ व्यतीत करते है। जिससे बालकों में सहयोग,सहनशीलता,नैतिकता आदि गुणों का विकास होता है।

यर्थातवादी दृष्टिकोण

बाल्यावस्था में बालक का दृष्टिकोण यर्थातवादी होता है। इस अवस्था में बालक कल्पना जगत से वास्तविक जगत में प्रवेश करने लगते है।

अनुकरण के प्रवृत्ति का विकास

बाल्यावस्था में अनुकरण की प्रवृति का सबसे अधिक विकास होता है। इस आयु में बालक झूठ बोलना तथा चोरी करना भी सीख जाते है।

संवेगो पर दमन

बाल्यावस्था में बालक उचित और अनुचित में अंतर समझने लगता है। बालक सामाजिक व पारिवारिक व्यवहार के लिए अपने भावनाओं का दमन और संवेगो पर नियंत्रण करना सीख भी जाता है।

बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप

बाल्यावस्था बालक के जीवन की आधार शिला होती है। तथा शिक्षा और विकास में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। शिक्षा विकास की एक प्रक्रिया है इसलिए बालक के शिक्षा को निर्धारित करते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान देना चाहिए –

शारीरिक विकास पर ध्यान

अरस्तु के अनुसार,"स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।" अतः बालक के मानसिक विकास के लिए शारीरिक विकास पर विशेष ध्यान आवश्यक है। बालकों के अच्छे स्वास्थ के लिए उन्हें संतुलित और पौष्टिक भोजन देना चाहिए। और बालकों की क्रियाशीलता बनाये रखने के लिए विद्यालय में खेल-कूद को कराना चाहिए।

भाषा विकास पर बल

बालकों के भाषा विकास पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। बालकों को वार्तालाप करने, कहानी सुनाने,पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने,वाद-विवाद करने,भाषण देने तथा कविता पढ़ाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

- रोचक पाठय सामग्री
- खेल तथा क्रिया द्वारा शिक्षा